लोक सभा में एकमात्र वैज्ञानिक मेघनाथ साहा

चक्रेश जैन

बासठ वर्ष पहले यानी 1951-52 में लोक सभा के प्रथम चुनाव में वैज्ञानिक मेघनाद साहा निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव मैदान में उतरे थे। उन्होंने उत्तर-पश्चिम कलकत्ता (अब कोलकाता) से नामांकन पर्चा भरा। यह वही कलकत्ता है, जो उन दिनों कई वैज्ञानिकों की कर्मभूमि रहा है। वे यहां से भारी मतों से विजयी हुए। उनके निर्वाचित होने पर वैज्ञानिकों सहित सभी को अत्यधिक आश्चर्य हुआ था। मेघनाथ साहा मूलतः वैज्ञानिक थे और उनकी राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय जगत में ख्याति भौतिकीविद के रूप में थी। उनकी जीत पर सबसे अधिक खुशी जिन वैज्ञानिकों ने ज़ाहिर की, उनमें महान वैज्ञानिक एवं विज्ञान संप्रेषक जेबीएस हाल्डेन शामिल थे।

वैज्ञानिकों के लिए लोक सभा चुनाव जीतना तब भी एक चुनौती था, आज भी एक चुनौती है। पहली बात, वैज्ञानिक चुनाव में हिस्सा नहीं लेते। दूसरी, चुनाव जीतने के राजनीतिक गुर उन्हें मालूम नहीं होते। हमारे वैज्ञानिक प्रायः सामाजिक जीवन से अलग-थलग शोध की दुनिया में खोए रहते हैं। उनकी लोकप्रियता फिल्म, रंगमंच, खेल और पेशेवर राजनेताओं जैसी नहीं होती। एक बात और, वे जनसभाओं में धुआंधार भाषण देने और मतदाताओं को अपने पक्ष में करने की कला में भी पारंगत नहीं होते। लेकिन इस दृष्टि से मेघनाथ साहा अन्य वैज्ञानिकों से सर्वथा भिन्न थे। उन्हें मालूम था कि अपनी बातों को मनवाने का यथोचित और सशक्त मंच लोक सभा है। जब साहा पहली बार संसद भवन पहुंचे तो एक सांसद ने टिप्पणी करते हुए कहा था कि वैज्ञानिकों को अपनी प्रयोगशाला में रहकर ही रिसर्च करनी चाहिए। इस पर उनका सहज उत्तर था - मैं संसद भवन को भी अपनी प्रयोगशाला मानता हूं। उनके इस उत्तर से कुछ सांसद भौंचक्के रह गए थे। मेघनाद साहा ने लोक सभा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ वैज्ञानिक मुद्दों को ज़ोरदार ढंग से रखा और अपनी अलग पहचान बनाई।

विद्यार्थी जीवन से ही सामाजिक गतिविधियों से उनका सरोकार रहा। आचार्य प्रफुल्लचंद्र राय और जगदीशचंद्र बसु जैसे अध्यापकों ने उनके विद्यार्थी जीवन को संवारकर नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में अहम योगदान दिया था। साहा ने युवावस्था में ग्रामीण इलाकों में निकटता से गरीबी देखी, जिसका गहरा असर उनके मन पर पड़ा था। उनका मानना था कि सभी समस्याओं का एक प्रमुख कारण आर्थिक परेशानियां हैं, जिनका समाधान वैज्ञानिक ढंग से किया जा सकता है।

मेघनाद साहा को योजना आयोग का सदस्य मनोनीत किया गया। उन दिनों वैज्ञानिकों के लिए यह बड़ा और दुर्लभ सम्मान था। उन्होंने योजना आयोग में देश की पंचवर्षीय योजनाओं में विज्ञान के समावेश पर विशेष ज़ोर दिया। साहा ने विदेशों में विज्ञान के उपयोग से समाज में लोगों के जीवन स्तर में परिवर्तन देखा था। वे चाहते थे ऐसा परिवर्तन हमारे यहां भी दिखाई दे।

मेघनाद साहा बहुआयामी प्रतिभा के वैज्ञानिक थे। वे

खगोल भौतिकी के विद्वान थे। उन्होंने ऊष्मीय आयनन की मौलिक व्याख्या की थी। 1952 में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद ने भारतीय कैलेण्डर समिति गठित की, जिसका अध्यक्ष मेघनाद साहा को बनाया गया। उन्होंने शक संवत कैलेण्डर के निर्माण में अहम योगदान किया। साहा ने देश में परमाणु भौतिकी को बढ़ावा देने के लिए 1948 में कोलकाता में नाभिकीय भौतिकी संस्थान की स्थापना की।

उनकी विज्ञान समाचारों में विशेष रुचि थी। कोलकाता में 1934 में इंडियन साइंस न्यूज़ एसोसिएशन की स्थापना की गई, जिसके प्रथम सचिव मेघनाद साहा थे। वे इसी वर्ष विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन के जनरल प्रेसीडेंट चुने गए। उन्होंने इस मंच से नदियों में बाढ़ और अखिल भारतीय विज्ञान अकादमी के गठन पर विशेष ज़ोर दिया।

आरंभिक वर्षों में साहा और सत्येंद्रनाथ बोस ने मिलकर अनुसंधान किया, लेकिन आगे चलकर साहा लोक सभा और बोस राज्य सभा में पहुंच गए। राष्ट्रपति द्वारा राज्य सभा में विज्ञान, कला, खेल, साहित्य आदि क्षेत्रों की बारह प्रतिभाओं को नामजद किया जाता है। बोस को 1952 में राज्य सभा के लिए मनोनीत किया गया था।

1951 से आज तक लोक सभा चुनाव के इतिहास से स्पष्ट हो रहा है कि मेघनाद साहा ने एक नया इतिहास रचा और एक विख्यात वैज्ञानिक और लोकप्रिय सांसद दोनों रूपों में अपनी पहचान बनाई। उन्होंने लोक सभा के विभिन्न सत्रों और अधिवेशनों में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। उन्होंने सदन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का पुरज़ोर समर्थन करते हुए कहा था कि वैज्ञानिकों को आमजन की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए सार्वजनिक जीवन से जुड़ना चाहिए।

वास्तव में मेघनाद साहा अकेले वैज्ञानिक थे जिन्होंने लोक सभा में पहुंच कर वैज्ञानिकों की अलग-थलग रहने वाली छवि को खंडित किया। उन्होंने वैज्ञानिक बिरादरी को एक संदेश यह दिया कि अच्छे, लोकप्रिय और प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के लिए लोक सभा चुनाव चुनौती नहीं है। दूसरा यह कि हमारे वैज्ञानिकों को सामाजिक उत्तरदायित्वों से जुड़ना चाहिए। तीसरा, संसद में जनसामान्य से जुड़े वैज्ञानिक मुद्दों को उठाने के लिए वैज्ञानिक नेतृत्व को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत अगस्त 2014
अंक 307

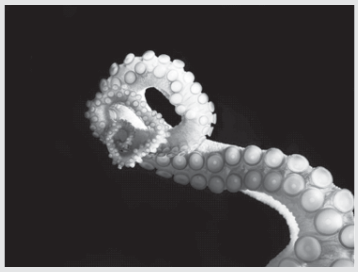

- **ऑक्टोपस की आठ टांगें उलझती क्यों नहीं?**
- **तकनीकी उच्च शिक्षा में सामाजिक असमानता**
- **गंगा में महाजीवाणु का आंतक**
- **क्या रीढ़विहीन जीवों को दर्द का अहसास होता है?**
- **कहानी हीलियम की खोज की**